Maha Kumbh 2025

The Maha Kumbh, a sacred congregation that unfolds every twelve years, is more than a spectacular gathering of millions-it is a spiritual odyssey that delves into the very essence of human existence.

At the heart of the Maha Kumbh Mela lies a symbol steeped in cosmic significance-the "Kumbh" or sacred pot. This vessel, laden with symbolism, transcends its physical form to embody the human body and the quest for spiritual awakening. According to Hindu mythology, the Kumbh symbolizes the celestial pot that emerged during the churning of the cosmic ocean, containing the divine nectar known as "amrit". Metaphorically, the Maha Kumbh represents the human form, and the nectar within symbolizes the spiritual essence intrinsic to every individual. The stamps are inspired from the famous verse :

त्रिवेणीं माधवं सोमं, भारद्वाजं च वासुकिम।
वन्दे अक्षयवटं शेष, प्रयागं तीर्थनायकम।।

STAMP1: MAHARSHI BHARADWAJ ASHRAM

Associated with Maharshi Bharadwaj Ashram, this place has been a revered religious site for centuries. During Maharshi Bharadwaj's time, it was renowned as an educational centre. According to Ramayaṇa and Purans, Shri Ram visited this place with Mata Sita and Lakshmaṇ while on his way to Chitrakoot during his Vanvas period. The famous Ramcharitmanas written by Tulasidas also begins from the Bharadwaj's Ashram in the Balkand.

Maharshi Bharadwaj was the author of numerous texts on subjects such as Grammar (Vyakaran), Ayurveda, Dhanurveda (Archery), Political Science (Rajneeti Shastra), Mechanics (Yantrasarvasva), Economics (Arthshastra), Purans, and Education, among others. However, today, only Yantrasarvasva and Shiksha (Education) are available. According to the Vayupuran, he wrote a book called Ayurveda Samhita, which was divided into eight parts and taught to his disciples. According to the Charak Samhita, he imparted the knowledge of Kayachikitsa (general medicine) to Atreya Punarvasu.

Maharshi Bharadwaj received knowledge of Ayurveda and Savitr Agni Vidya (knowledge of the fire of Savitr) from Indra, and later, in a different era, from Lord Brahma. By absorbing the power of fire, the Maharshi attained the essence of immortality and ascended to the heavenly realms, where he gained union with Aditya (the Sun). (Taittiriya Brahmaṇ 3/10/11)

Perhaps for this reason, Maharshi Bharadwaj was one of the longest-living sages. Maharshi Charak described him as one with an immeasurable lifespan. (Sutra Sthan 1/26).

Today, the site is home to several temples, including the Bharadwajeshwar Mahadev, Maharshi Bharadwaj, Tirthraj Prayag and Devi Kali among others. Nearby, the beautiful Bharadwaj Park offers a serene atmosphere for visitors to relax and unwind

STAMP2: SNAN

Prayagraj, the Tirthraj or 'King of Pilgrimages', is sanctified by the Triveni Sangam – the confluence of the Ganga, Yamuna, and the invisible Saraswati. According to ancient scriptures, bathing when Guru (Jupiter) enters Vrish Rashi purifies the soul and attains Moksha (Salvation) — known for hosting the Kumbh, Purna Kumbh, and the Magh Mela annually. Prayagraj Kumbh is a mega event that features various rituals, with the Snan bathing ritual known as Tirth Snan being the most significant. The Ganga is considered the river of knowledge, the Yamuna is regarded as the symbol of devotion, Saraswati is the bestower of liberation (moksha), and Lakshmi grants wealth. Therefore, one who bathes at the Triveni Sangam of the three rivers Ganga, Yamuna, and the invisible Saraswati -attains knowledge, devotion, wealth, and liberation (Moksha).

Millions of pilgrims take part in the Kumbh Tirth Snan at the Triveni Sangam, performing this sacred ritual per the belief that by submerging oneself in the Sangam Jal, one is purified of all sins, releases oneself and their ancestors from the cycle of rebirth called Moksha, and they also ultimately attain their Moksha. Along with the Tirth Snan, pilgrims also camp on the banks of the holy river called Kalpvas and participate in discourses from various Sadhus, Tapasvis, and spiritual Mentors seeking spiritual enlightenment and guidance. The Kumbh Mela is a unique opportunity for devotees to connect with Sanatan discourse of harmony, and their spiritual heritage and seek Moksha.

STAMP3: AKSHAYVAT

The Akshayvat, also known as the immortal Banyan tree, is a sacred tree deeply rooted in Sanatan scriptures. This holds significant importance as it is believed to be the tree under which Shri Ram, Mata Sita and Lakshman, rested during their Vanvas. According to the Scriptures, the tree is immortal and has been a silent witness to the passage of time, making it a revered and sacred site for devotees and pilgrims. According to the Padma Puran, even during the period of cosmic dissolution (Pralay), the Akshayvat remains steadfast. For this reason, it is called Akshayvat (eternal).

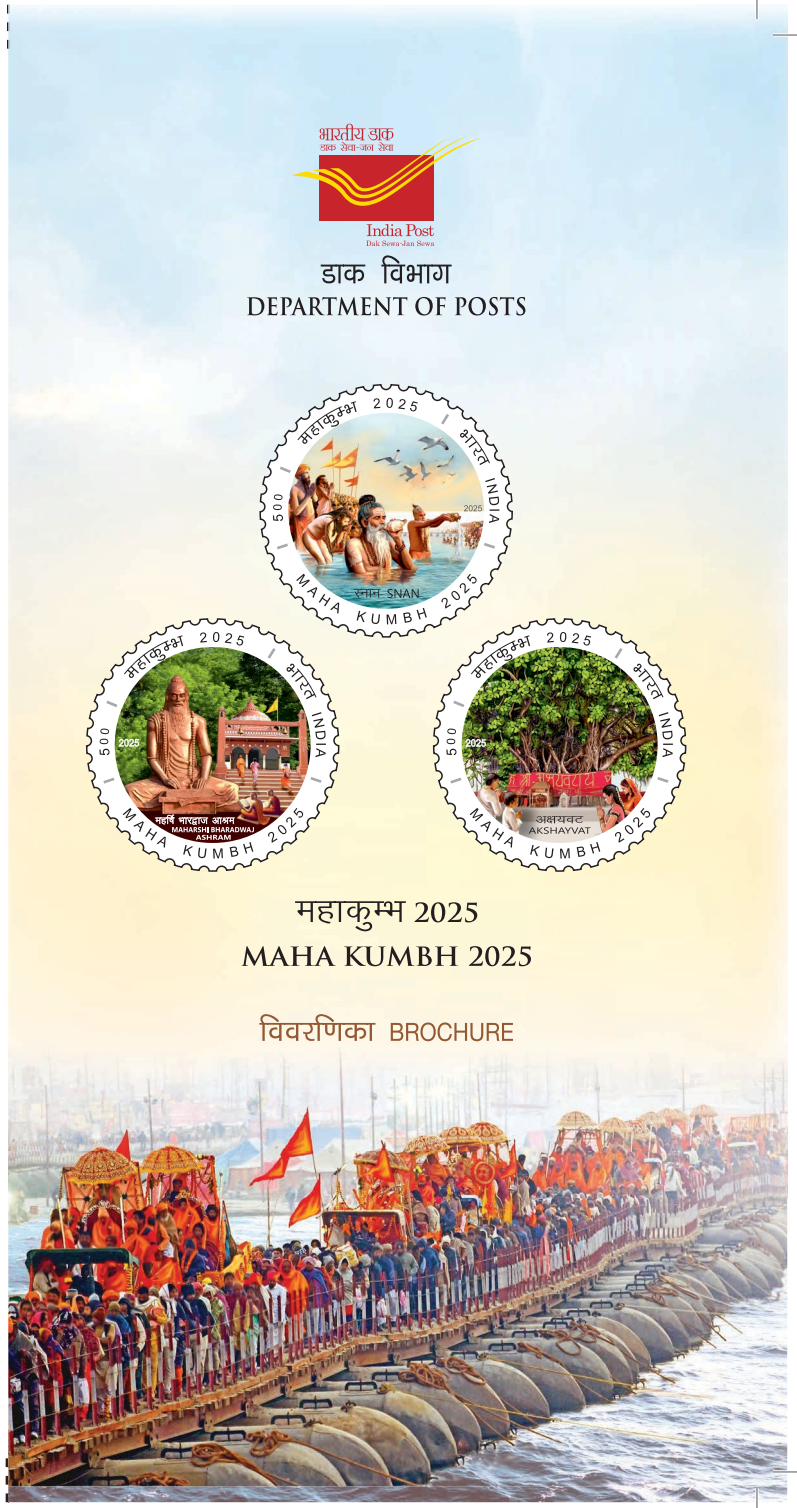
स चाक्षयवटः ख्यातः कल्पान्तेऽपि च दृश्यते।
शेते विष्णुर्यस्य पत्रे अतोऽयमव्ययः स्मृतः।।
——————पद्म पुराण 24/8

During the time of Pralay (cosmic dissolution), Lord Vishnu rests on its leaves, which is why it is called Akshay (eternal). Not only Maharshis did meditate under this tree, but even the gods and goddesses performed penance here. For this reason, this tree is considered the abode of all the deities. According to the Padma Puran, wherever the shadow of the Akshayvat falls, it generates divinity in humans and removes their sins and sufferings. Akshayvat is regarded as a witness to all actions (Karmas).

Department of Posts is proud to release a Souvenir Sheet consisting three stamps on the holy occasion of Maha Kumbh 2025 – a pilgrimage of the soul that beckons to all who seek the divine within.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Sankha Samanta
Text	:	Referenced from content provided by the proponent



महाकुम्भ 2025

हर बारह वर्ष में आयोजित होने वाला महाकुम्भ एक पवित्र समागम है, जो लाखों–लाख लोगों के लिए एक शानदार और भव्य धार्मिक आयोजन से कहीं अधिक है – उनके लिए यह एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है, जो मानव जीवन के मन और आत्मा का गहन संगम है।

महाकुम्भ मेले के केंद्र में लौकिक महत्व से युक्त एक प्रतीक – ''कुम्भ'' या पवित्र पात्र है। प्रतीकात्मकता से युक्त यह पात्र अपने भौतिक स्वरूप से आगे मानव शरीर और आध्यात्मिक जागृति की खोज का प्रतीक है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कुम्भ उस दिव्य कलश का प्रतीक है जो महासागर मंथन के दौरान निकला था, जिसमें ''अमृत'' नामक पवित्र रस था। प्रतीकात्मक रूप से, महाकुम्भ मानव रूप का प्रतिनिधित्व करता है और इसके भीतर का अमृत प्रत्येक व्यक्ति में अंतर्भूत आध्यात्मिक सार का प्रतीक है। ये डाक–टिकटें प्रसिद्ध श्लोक से प्रेरित हैं :

त्रिवेणीं माधवं सोमं, भारद्वाजं च वासुकिम्।
वन्दे अक्षयवटं शेष, प्रयागं तीर्थनायकम्।।

डाक-टिकट 1: महर्षि भारद्वाज आश्रम

महर्षि भारद्वाज से जुड़ा यह स्थान सदियों से एक पूजनीय धार्मिक स्थल रहा है। महर्षि भारद्वाज के समय के दौरान यह एक शैक्षणिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था। रामायण और पुराणों के अनुसार, श्रीराम अपने वनवास की अवधि के दौरान चित्रकूट जाते समय माता सीता और लक्ष्मण के साथ इस स्थान पर आए थे। तुलसीदास द्वारा लिखित प्रसिद्ध रामचरितमानस में भी बालकांड का अध्याय भारद्वाज के आश्रम से ही शुरू होता है।

महर्षि भारद्वाज ने अनेक ग्रंथों की रचना की थी जिनमें से प्रमुख विषय– व्याकरण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, राजनीति शास्त्र, यंत्रसर्वस्व, अर्थशास्त्र, पुराण और शिक्षा थे। हालांकि, आज केवल यंत्रसर्वस्व और शिक्षा ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। वायुपुराण के अनुसार, उन्होंने आयुर्वेद संहिता नामक एक पुस्तक की रचना भी की थी, जिसे आठ खण्डों में विभाजित किया गया था जिन्हें उनके शिष्यों को पढ़ाया जाता था। चरक संहिता के अनुसार, उन्होंने अत्रेय पुनर्वसु को कायाचिकित्सा (सामान्य चिकित्सा) का ज्ञान दिया।

महर्षि भारद्वाज ने आयुर्वेद और सावित्र अग्नि विद्या का ज्ञान इंद्र से और बाद में एक अन्य काल में, भगवान ब्रह्मा से प्राप्त किया। अग्नि की शक्ति को अवशोषित करके महर्षि ने अमरत्व प्राप्त किया और स्वर्ग लोक की ओर विचरण कर गए, जहां आदित्य (सूर्य) के साथ उनका मिलन हुआ। (तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/10/11)

इसी कारण से, शायद महर्षि भारद्वाज सबसे दीर्घायु तक जीवित रहने वाले ऋषियों में से एक थे। महर्षि चरक ने उन्हें मृत्यु से परे एक व्यक्ति के रूप में वर्णित किया। (सूत्र स्थान 1/26)

अब इस स्थल पर कई मंदिर हैं, जिनमें भारद्वाजेश्वर महादेव, महर्षि भारद्वाज, तीर्थराज प्रयाग और देवी काली जैसे मंदिर शामिल हैं। इसके नजदीक ही रमणीक भारद्वाज पार्क है, जिसका शांत वातावरण आगंतुकों को विश्राम और तनावमुक्त रहने में सहायता करता है।

डाक-टिकट 2: स्नान

प्रयागराज, तीर्थराज या 'तीर्थों का राजा', त्रिवेणी संगम– गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम के लिए पवित्र माना जाता है। पौराणिक शास्त्रों के अनुसार, जब गुरु (बृहस्पति) वृष राशि में प्रवेश करते हैं, तो स्नान करने से आत्मा शुद्ध होती है और मोक्ष प्राप्त होता है – जिसे हर साल कुम्भ, पूर्ण कुम्भ और माघ मेले की मेजबानी के लिए जाना जाता है। प्रयागराज कुम्भ एक विशाल आयोजन है जिसमें विभिन्न अनुष्ठान होते हैं, जिसमें तीर्थ स्नान के रूप में जाना जाने वाला स्नान अनुष्ठान सबसे महत्वपूर्ण है। गंगा को ज्ञान की नदी माना जाता है, यमुना को भक्ति का प्रतीक माना जाता है, सरस्वती मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करती हैं, और लक्ष्मी धन प्रदान करती है। इस प्रकार से जो मनुष्य तीनों नदियों गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के त्रिवेणी संगम में स्नान करता है, उसे ज्ञान, भक्ति, धन और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

लाखों तीर्थयात्री त्रिवेणी संगम में कुम्भ तीर्थ स्नान में भाग लेते हैं। यह पवित्र अनुष्ठान इस मान्यता के अनुसार किया जाता है कि संगम के जल में डुबकी लगाने से व्यक्ति के सभी पाप धुल जाते हैं और वह स्वयं को व अपने पूर्वजों को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त करता है, जिसे मोक्ष के नाम से जाना जाता है और इससे अंततः उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। तीर्थ स्नान के साथ–साथ, तीर्थयात्री पवित्र नदी के तट पर शिवर में भी रहते हैं जिसे कल्पवास का नाम दिया गया है और इस अवधि में आध्यात्मिक ज्ञान एवं मार्गदर्शन के लिए विभिन्न साधुओं, तपस्वियों और आध्यात्मिक गुरुओं के प्रवचनों में भाग लेते हैं। कुम्भ मेला भक्तों के लिए सनातन विमर्श की समरसता, उनकी आध्यात्मिक विरासत से जुड़ने और मोक्ष–प्राप्ति का एक अनूठा अवसर है।

डाक-टिकट 3: अक्षयवट

अक्षयवट, सनातन धर्मग्रंथों में अत्यधिक महत्व वाला एक पवित्र वृक्ष है। जो अमर बरगद के पेड़ के रूप में भी जाना जाता है। इसकी इतनी महत्ता इसलिए है क्योंकि यह माना जाता है कि यह वही वृक्ष है जिसके नीचे श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास के दौरान विश्राम किया था। धर्मग्रंथों के अनुसार यह वृक्ष अमर है और गुजरते समय का मूक साक्षी रहा है, जिससे यह भक्तों और तीर्थयात्रियों के लिए एक पूजनीय और पवित्र स्थल बन गया है। पद्म पुराण के अनुसार, प्रलय की अवधि के दौरान भी अक्षयवट स्थिर रहता है। इस कारण से इसे अक्षयवट (शाश्वत) कहा जाता है।

स चाक्षयवटः ख्यातः कल्पान्तेऽपि च दृश्यते।
शेते विष्णुर्यस्य पत्रे अतोऽयमव्ययः स्मृतः।।

——————पद्म पुराण 24/8

प्रलय के समय भगवान विष्णु इसके पत्तों पर विश्राम करते हैं, इसलिए इसे अक्षय (शाश्वत) कहा जाता है। इस वृक्ष के नीचे न केवल महर्षियों ने तपस्या की, बल्कि देवी–देवताओं ने भी यहां तपस्या की। इसी कारण से इस वृक्ष को सभी देवी–देवताओं का निवास माना जाता है। पद्म पुराण के अनुसार, अक्षयवट की छाया जहां कहीं भी पड़ती है, वहां मनुष्य में देवत्व पनपता है और उनके पाप, कष्ट और पीड़ाएं दूर होती हैं। अक्षयवट को सभी कर्मों का साक्षी माना जाता है।

डाक विभाग, महाकुम्भ 2025–अपने भीतर दिव्यता की तलाश करने वाली सभी आत्माओं के तीर्थ के पावन अवसर पर तीन डाक–टिकटों वाले स्मारिका शीट को जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण विवरणिका/विरूपण कैशे पाठ : श्री शंख सामंत

: प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे (3)
Denomination	: 500 p (3)
मुद्रित स्मारिका शीट	: 2,12,750
Printed Souvenir Sheet	: 2,12,750
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00